श्रीः

ज्ञान का गूढ़ रहस्य

लेखक
दिव्या बन्धु

चौखम्भा प्रकाशन
वाराणसी : 221001

India's Fastest Growing Self Publishing House

Booksclinic Publishing

-----------------------------Contact Us At-----------------------------

Call or Whatapp @ 8965949968 or Mail @ publish@booksclinic.com

Website: - **www.booksclinic.com**

B.D. Complex, Near Tifra Over Bridge, Bilaspur, Chhattisgarh, India, 495001

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author.

All rights reserved, no part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

Publisher: Booksclinic Publishing
Edition: First
ISBN: 978-93-91046-39-2
Copyright ©Author 2021
Year:-2021
Genre:Spiritual Fiction
₹: 275/-
$: 3.78

Printed in India

विषय-सूची

प्रस्तावना (iii)

1. काम-क्रोध-लोभ कैसे व्यक्ति का पतन करते हैं। 1
2. स्थिर के साथ अस्थिर का कोई सम्बन्ध नहीं है। 1
3. धन सम्पत्ति के बढ़ने से मैं का महत्व बढ़ता नहीं बल्कि संकीर्ण होता है। 2
4. मन के साथ बुद्धि को भी स्थिर करना आवश्यक है। 2
5. विरक्ति, वैराग्य और वैराग्य का ज्ञान लाभ। 2
6. आत्मज्ञान के अलावा सभी ज्ञान मोह है। 3
7. जिसका त्याग करना है। उसका ज्ञान आवश्यक है। 3
8. कर्म योग, ज्ञान योग, एवं भक्ति योग का व्यवहार-। 4
9. गुरू में व्यक्ति बुद्धि (गुरू एक शरीरधारी) रखने से आत्मोन्नति रुद्ध होती है-। 4
10. विपरीत वस्तुओं के द्वन्द एवं समन्वय से जगत संचालित है। 5
11. निर्भरता के अलावा कोई उपाय नहीं है। 5
12. मैं और मेरा से सम्बन्धित गूढ़ तथ्य। 6
13. ग्रहण एवं त्याग का समन्वय होना चाहिए। 6
14. ईश्वर का अवस्थान एवं उसका परिचय। 7
15. आत्मज्ञान लाभ के उपाय और उसमें आने वाली बाधा। 7
16. साधना और सिद्धिलाभ की गति और स्थिति विधा। 8
17. कर्म, ज्ञान, भक्ति एक दूसरे के परिपूरक हैं। 8
18. मन के अवस्थान/स्थिति के अनुसार जीवन प्रवाह चलता है। 9
19. सत्य और मिथ्या का अवस्थान और उसका स्वरूप। 10
20. सुख-दुःख का रहस्य और उसका समाधान। 10

21. सत्य लाभ न होने का कारण।
22. वैराग्य एवं अभ्यास का विशेष मूल्यांकन।
23. सत्य के सम्बन्ध में महापुरूषों के मौलिक सूत्र।
24. सत्य के पथ सार्थकता की सतर्कता।
25. साधारण साधक तथा सिद्ध में 'मैं' का भिन्न-भिन्न अवस्थान/स्तर।
26. केवल वाह्य विद्या ही नहीं अन्तर विद्या में भी शिक्षित होना होगा।
27. साधारण साधक और सिद्ध में भेद से सुख तीन प्रकार के होते हैं।
28. यथार्थ सुख का दर्शन।
29. अनुभूति नहीं स्थिति लाभ ही साधक का मूल लक्ष्य होना चाहिए।
30. उद्देश्य को स्थिर करके दीक्षा लेनी चाहिए।
31. गुरू करने का उद्देश्य।
32. पूजा किसकी की जाती है? पूजा का रहस्य क्या है?
33. चिन्ता को नहीं पहचानने से साधन जीवन वृथा होता है।
34. प्रत्यक्ष रूप से सत्य के समक्ष होने का उपाय।
35. सत्य के पथ में वाह्य एवं अन्तर की बाधायें।
36. अन्तर में चार युगों का अवस्थान।
37. समझने/सीखने की इच्छा न रहने से कोई किसी को समझा या सिखा नहीं सकता।
38. निर्विषय जाग्रत ज्ञान ही ब्रह्म ज्ञान है।
39. त्याग और भोग मिथ्या व्यवहार है।
40. ब्रह्म ज्ञान और जगत की वास्तविकता।
41. ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति।
42. सत्य रूप से सत्य लाभ कैसे होता है?
43. विज्ञान का चैतन्य लाभ।
44. सत्य का आवरण एवं (उन्मोचन)।
45. सत्य और मिथ्या।
46. सत्य का प्रत्यक्ष न होना।
47. सत्य की खोज में बुद्ध देव।

48. चैतन्य लाभ के पथ में चेतना का क्रम स्तर। 26
49. आपेक्षिक सत्य के पीछे का यथार्थ सत्य क्या है? 27
50. आपेक्षिक वाद। 27
51. वाह्य सत्य-मिथ्या के उर्ध्व में सत्य का अवस्थान। 28
52. जगत में सत्य को मानना कठिन है। 28
53. वास्तविक और सत्य का समन्वय कहाँ है? 28
54. तीन गुणों का आन्तरिक रहस्य। 29
55 आसक्ति एवं अहंकार नहीं छोड़ने पर भगवत् एवं भगवान के लाभ का अधिकार नहीं। 29
56. चेतना के भिन्न-भिन्न स्तरों का भेद किये बिना पूर्ण ज्ञान नहीं होता है। 30
57. व्यक्ति का अस्तित्व ईश्वर तथा उसका स्पन्दन जीव/जगत है। 31
58. ज्ञान मार्ग में ''मैं'' तत्व तथा भक्ति मार्ग में ''तुम'' तत्व की साधना। 31
59. ईश्वर जिसके समक्ष अपने को जितना प्रकट करते हैं, वह उतना ही जानता है। 32
0. ईश्वर लाभ तथा उसके साथ प्रेम ही साधन जीवन का मूल उद्देश्य होना चाहिए। 32
1. साधक के अन्दर आसक्ति एवं अहंकार रहने से साधन जीवन वृथा हो जाता है। 33
2. जितने मत उतने पथ-जिसको लेकर मतभेद हैं? 33
3. अहंकार ही हम लोगों के आन्तरिक गुरू का रूप धारण कर हमारा परिचालन कर रहा है। 34
4. हम कब भगवान श्रीकृष्ण की संगिनी राधा का भाव प्राप्त करेगें। 34
5. केवल जीवन में वैराग्य को लेकर ही नहीं बल्कि जीवन व्यवहार करते हुये भी सत्य को जानना होगा। 34
6. अहंकार और आसक्ति ही आवरण और विक्षेप का मूल कारण है। 35
7. आत्मज्ञान लाभ का उपाय। 35
8. सभी प्राणधारी/जीव भगवान के हैं। कुछ भी मेरा नहीं है। 36
. जगत सत्य यह निश्चय करने से पूर्व सत्य क्या है? इसकी जानकारी अवश्य होना चाहिए। 36
. 'मैं' स्वरूप के ज्ञान में त्याग और भोग बन्धन स्वरूप है। 37
. असीम तथा ससीम में से किसी एक को छोड़ने पर पूर्णाअवस्था नहीं होती है। 37
. ध्यान समाधि का उद्देश्य एवं इसकी सीमा को समझना आवश्यक है। 38
पूजा एवं पूजारी का ज्ञान न रहने पर पूजा करना वृथा होता है। 38
सद्गुरू को पहचानने का उपाय। 39

75. हम लोगों का मन इतना अस्थिर क्यों हैं?
76. भगवान का भिन्न-भिन्न रूपों में आस्वादन करना।
77. आत्मा ही शरीर को धारण करती है तथा शरीर निर्वहन का दायित्व आत्मा का है।
78. ब्रह्मज्ञान का परिचय एवं उसकी प्राप्ति।
79. सृष्टि के नियम अनुसार ही वाह्य जगत में रहना होगा।
80. विवर्तन वाद के ऊपर पुर्नजन्मवाद नियमित होता है।
81. जगत के सृष्टा ने अपने को विभिन्न प्रकार से आस्वादन करने हेतु ही सृष्टि में विविधता लायी है।
82. मिथ्या को धारण करते हुये सत्य को नहीं जाना जा सकता।
83. परमाणु विस्फोट पद्धति के अनुसार ही चेतना में भी विस्फोट होता है।
84. आध्यात्मिक पतन का आन्तरिक अर्थ।
85. षड्रिपुओं और अष्टपाश को जय न करने से आध्यात्मिक जीवन वृथा हो जाता है।
86. हमें जगत जिस रूप में दिखाई दे रहा है वैसा नहीं है।
87. सभी चेतना का खेल है; इसको छोड़कर कुछ भी नहीं है।
88. चतुराश्रम छोड़कर हमें अत्याश्रमी होना होगा।
89. जीवन के प्रतिष्ठा के पीछे कितने रहस्य छुपे हुये हैं।
90. ज्ञान/आत्मबोध में रहते हुये बुद्धि एवं वास्तविक अनुभूतियों को देखते हुये जीवन में चलना होगा।
91. दुःख को पहचान लेने से दुःख हट जाता है।
92. हमें ज्ञानगंज और सिद्धाश्रम में पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त करनी पड़ेगी।
93. शरीर के लिए व्यायाम, मन के लिए ध्यान, आत्मा के लिए ज्ञान तथा परमात्मा को प्रेम चाहिए।
94. आध्यात्म में अग्रगति/प्रगति के परिमाप का उपाय।
95. साधन जीवन का मूल उद्देश्य तथा अवस्थान क्या होगा?
96. सिद्धिलाभ का परिचय एवं क्रमोन्नति।
97. ज्ञान के स्वरूप को जाने बिना ज्ञान का अभाव नहीं मिटता।
98. वैज्ञानिकों को भी विश्वास करके आगे बढ़ना होता है।
99. अपने समझ के अनुसार दूसरों को समझने का प्रयास कर हम गल्ती करते हैं।
100. व्यक्ति में प्राण-प्रतिष्ठा होने पर अखण्ड ज्ञान लाभ होता है।
101. क्रियायोग की अन्तर कथा।

102. योग के दसों अंगों की पहचान एवं उनकी प्राप्ति। 53
103. भगवान को प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करने का आन्तरिक अर्थ। 53
104. चिन्तामुक्त चेतना का लाभ होने पर हम ईश्वर का जीवान्त विग्रह बन जाते हैं। 54
105. अतीत का कर्मफल तथा वर्तमान का सिद्धान्त दोनों भाग्य बनाते हैं। 54
106. दूसरों के प्रति विद्वेष दूसरों को नहीं स्वयं को भोगना पड़ता है। 55
107. हम लोगों के बन्धन का मूल कारण संसार न होकर हमारे संस्कार हैं। 55
108. तपस्या, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्राणिधान क्रिया योग की अन्तर्वात है। 56
109. ईश्वर में प्रविष्ट होने की क्रमधारा। 56
110. स्वयं (आत्मा) को जाने बिना हम स्वयं से नहीं मिल सकते हैं। 57
111. हम आध्यात्म के किस स्तर में है इसे समझना होगा। 57
112. युक्ति/तर्क का त्याग कर हमें अन्तर से युक्त होने की प्रचेष्टा करनी चाहिए। 58
113. अपनी चाह अनुसार प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर का आस्वादन अलग-अलग तरह से करता है। 58
114. वेद के पाण्डित्य से कभी भी ब्रह्मज्ञान नहीं होता है। 59
115. हर व्यक्ति स्वयं एक जीवान्त विग्रह है। 59
116. भगवान अप्रत्यक्ष न होकर प्रत्यक्ष प्रमाणित है। 60
117. आत्मज्ञान हेतु शब्द की साधना एवं नियम को जानना आवश्यक है। 60
118. कर्म के अनुसार ज्ञान लाभ होता है। 61
119. सत्य के पथ में शून्यता एवं पूर्णता का रहस्य। 61
20. अनुभूति में अद्वैत ज्ञान। 62
21. अद्वैत ज्ञान ही आत्मज्ञान है। 62
22. अद्वैत ज्ञान के अभाव में बन्धन नहीं छूटता। 63
23. अद्वैत ज्ञान का अद्वैत स्तर। 63
24. ज्ञान के पथ में अद्वैत ज्ञान। 63
25. अखण्ड बोध में अद्वैत ज्ञान। 64
26. अद्वैत बोध में विश्व ज्ञान। 64
7. ज्ञान और प्रेम की दृष्टि में अद्वैत ज्ञान। 64
8. हर व्यक्ति अपने वर्तमान अवस्थान में रहना चाहता है। 65

129. त्याग से शान्ति लाभ एवं भोग (आत्मा, परमात्मा का एकत्व) से आनन्द लाभ होता है। 65
130. बुद्धि योग तथा बुद्धि नाश किस प्रकार होता है? 66
131. बुद्धि के अधीन में काम, क्रोध का सद्उपयोग होना चाहिए। 66
132. सभी में भगवान होने पर भी सभी लोग भगवान नहीं हैं। 67
133. हम किसकी साधना करते हैं? 67
134. शांति लाभ का गुह्य रहस्य। 68
135. आत्मज्ञान के अलावा सभी ज्ञान अज्ञान हैं। 68
136. भक्ति की सीमाबद्धता को समझना आवश्यक है। 68
137. साधन जीवन के तीन महाशत्रु। 69
138. हम लोगों में अज्ञान ज्ञान का रूप लेकर कार्यरत है। 69
139. जगत आपेक्षिक/परिवर्तनशील है। यह जानते हुये भी हम उसके अनुसार व्यवहार नहीं करते। 69
140. अचेतन तथा चेतन भेद से स्थिरता दो प्रकार की होती है। 70
141. ईश्वर दर्शन का गूढ़ रहस्य। 70
142. शीघ्र सिद्धि लाभ करने का उपाय। 71
143. सृष्टा की दृष्टि से कोई वैषम्य/भेद नहीं है। 71
144. प्रणाम करना तथा आशीर्वाद लेना दोनों ही योग साधना को इंगित करते हैं। 71
145. व्यक्ति चेतना की निरपेक्षता ही चैतन्य लाभ का उपाय है। 72
146. हमने जिस सम्भावना की सृष्टि की है। वही हमारे साथ घटित हो रहा है। 72
147. निरपेक्षता को नहीं जानने के कारण ही हम विभिन्न तरह के अभियोगों का सृजन करते हैं। 73
148. जगत में कैसे चलना चाहिए? 73
149. सत्य का पूर्ण परिचय। 74
150. हम जगत में रहते तो हैं किन्तु जगत के नियम से अनभिज्ञ हैं। 74
151. जिसका जो स्वभाव है। वह उसी में सिद्ध है। 74
152. साधना में शरणागति एवं पुरूषाकार दोनों की आवश्यकता है। 75
153. सिद्धलाभ में साधना का संस्कार भी बन्धन कारक है। 75
154. वाह्य त्याग भी बन्धन का कारण है। 76
155. निरपेक्ष न रहने से सत्य समझ में नहीं आता है। 76

156. साधारण, साधक, सिद्ध/योगी/अवधूत तथा सिद्ध के सिद्ध/गुरू के गुरू का अवस्थान। 77
157. आस्तिक एवं नास्तिक दोनों ही स्थितियों से सत्य निरपेक्ष है। 77
158. दबाव सहन करने की समर्थ तथा असमर्थ होने का रहस्य। 78
159. जीवात्मा और परमात्मा का परिचय एवं अवस्थान। 78
160. अज्ञात कारणों से ही हम मृत्यु से डरते हैं। 79
161. यथार्थ स्वजन का संधान। 79
162. हम दर्शक/साक्षी होते हुये भी दृश्य बने हुये हैं। 80
163. पूर्ण से पूर्ण निकालने पर भी पूर्ण ही अवशिष्ट रहता है। 80
164. लाखों साधकों में कोई एक मुक्त होता है। 81
165. विषय त्याग नहीं चिन्ता त्याग करना मूल है। 81
166. ईश्वर को पुकारने के साथ-साथ हमें अपने अवस्थान को भी समझना होगा। 81
167. ईश्वर और व्यक्ति/हम लोगों के दूरत्व का रहस्य। 82
168. आध्यात्मिक जीवन में किस प्रकार चलना चाहिए? 82
169. "मैं" (आत्मा) स्वरूप को नहीं जानना ही मानव की मौलिक अज्ञानता है। 83
170. गुरू कृपा बिना साधना वृथा है। 83
171. वाह्य जगत में सभी कुछ आसक्ति एवं विरक्ति का खेल है। 84
172. आसक्ति एवं अहंकार से मुक्त होना सरल नहीं है। 84
173. बद्ध एवं मुक्त पुरूषों में सुख का स्वरूप। 84
174. अपनी चेतना से प्रेम करना/युक्त होना ही भगवान कृष्ण से प्रेम करना है। 85
175. भगवान के साथ अपनत्व होना मुक्ति से भी श्रेष्ठ है। 86
176. ज्ञान के अस्तित्व एवं स्पन्दन को नहीं समझने से ज्ञान वृथा हो जाता है। 86
177. चैतन्य दर्शन :- 87
(1) चिन्ता का सूत्र 87
(2) चेतना का सूत्र 89
(3) चैतन्य का सूत्र 93
परिशिष्ट 95
विशिष्ट उपदेश 95